This question paper contains 2 printed pages. *Your Roll No. .....*

Sl. No. of Ques. Paper	**: 3705**	**FC**
Unique Paper Code	**: 62051102**	
Name of Paper	**: MIL, Hindi Bhasha Aur Sahitya – A**	
Name of Course	**: B.A. (Prog.) Hindi A**	
Semester	**: I**	
Duration	**: 3 hours**	
Maximum Marks	**: 75**	

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) जैसी मुष तैं नीकसै, तैसी चालै नाहिं।
मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जमपुर जांहिं।।
पद गांएँ मन हरषियाँ, साषी कह्यां अनंद।
सो तन नाँव न जांणियां, गल मैं पड़िया फंध।।

अथवा

तनक हरि चितवाँ म्हारी ओर।
हम चितवाँ थें चितवो णा हरि, हिवड़ों बड़ो कठोर।
म्हारी आसा चितवण थारी, ओर णा दूजा दौर।
ऊभ्याँ ठाढ़ो अरज करुँ छूँ करताँ करताँ भोर।
मीरा रे प्रभु हरि अविनासी देस्यूँ प्राण अँकोर।।

(ख) बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छाड़िये, खौटैं ग्रह जपु, दानु।।
मरतु प्यास पिंजरा-पर्‌यौ सुआ समै कैं फेर।
आदरु दै दै बालियतु बाइसु बलि की बेर।।

अथवा

रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।
एक अचंभौ भयौ घनआनंद हैं नित ही पल-पाट उघारे
टारे टरैं नहीं तारे कहूं सू लगे मनमोहन-मोह के तारे।।

(ग) दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत-सहस्र फुट ऊँचाई पर
अलखनाभि उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो-होकर
तरल-तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

अथवा

मेरे नगपति ! मेरे विशाल !
साकार, दिव्य, गौरव विराट,
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल !
मेरे जननी के हिम-किरीट !
मेरे भारत के दिव्य भाल !
मेरे नगपति ! मेरे विशाल ! $10 \times 3 = 30$

2. किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए:
   (i) बिहारी
   (ii) घनानंद। 10

3. कबीर की कविताओं में व्यक्त सामाजिक चेतना पर विचार कीजिए।

अथवा

मीरा के पदों का प्रतिपाद्य लिखिए। 10

4. 'हिमालय के प्रति' कविता के आधार पर दिनकर की काव्य-कला पर विचार कीजिए।

अथवा

'नागार्जुन की काव्य भाषा जन-जन की भाषा है' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। 10

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:
   (i) हिन्दी भाषा का विकास
   (ii) आधुनिक भारतीय भाषाएँ
   (iii) आदिकाल की विशेषताएँ
   (iv) सूफीकाव्य
   (v) द्विवेदी युगीन कविता।
   (vi) जयशंकर प्रसाद। $5 \times 3 = 15$